दिन जल्दी-जल्दी ढलता है

डॉ हरिवंशराय बच्चन

गीत

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं-
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं!

शब्दार्थ : ढलता = समाप्त होता। पथ = रास्ता। मजिल = लक्ष्य। पंथी = यात्री।

संदर्भ : प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह, भाग-2' में संकलित गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' से उधृत है। इसके रचनाकार डॉ हरिवंश राय बच्चन हैं।

प्रसंग : यहां पर दिन और यात्री के माध्यम से जीवन का प्रतीकात्मक चित्रण किया गया है।

व्याख्या : कवि ने प्रत्यक्ष रूप से तो यात्रा करने वाले व्यक्ति का चित्रण किया है, परंतु यह प्रतीकात्मक रूप् से जीवन रूपी यात्रा का चित्रण भी है। जीवन रूपी दिन बड़ी तेजी से ढलता है। मनुष्य के मन में चिंता है कि कहीं रास्ते में ही रात न हो जाये, अर्थात जीवन का अंत उसी समय न हो जाये, जबकि अभी मंजिल तक पहुंचना बाकी हो। इसी कारण से वह अपनी गति बढ़ा देता है, ताकि अंधकार होने से पहले ही अपने लक्ष्य पर पहुंच जाये। उसका उत्साह और भी बढ़ जाता है।

काव्य सौंदर्य :

1 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
2 कविता में सरल प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।
3 कविता की भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है।
4 कविता के इस पद में शांत रस है।

विशेष- कवि ने पथ और राहगीर के माध्यम से जीवन और उस सत्य को प्रकट किया है।

प्रश्न : (क) 'हो जाए न पथ में'- यहाँ किस पथ की ओर कवि ने संकेत किया हैं?

प्रश्न : (ख) पथिक के मन में क्या आशंका हैं?

प्रश्न : (ग) पथिक के तेज चलने का क्या कारण हैं?

प्रश्न : (घ) कवि दिन के बारे में क्या बताता हैं?

2.

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे-
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है!

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

शब्दार्थ : प्रत्याशा = आशा। नीड़ = घोंसला। पर = पंख। चचलता = अस्थिरता।

प्रसंग : यहां पर कवि ने पक्षी और उसके चूजों के माध्यम से जीवन की ही बात को आगे बढ़ाया है।

व्याख्या : कवि पक्षियों के माध्यम से भी जीवन की अनिश्चितता का चित्रण कर रहा है। मादा पक्षी को संध्या होते ही यह चिंता होने लगती है कि उसके चूजे उसके लौटने की राह देख रहे होंगे। वे व्याकुल होकर घोंसलों से अपनी गर्दन निकालकर पंथ निहार रहे होंगे। तब पक्षियों के पंखों में और भी गति आ जाती है। वे विलंब किये बिना ही अपने चूजों तक पहुंचने के लिये अपनी गति बढ़ा देते हैं।

पद सौंदर्य :

1 भाषा में अत्यंत सरलता है। शब्द चयन उपयुक्त है।
2 पद में शांत रस है।
3 घोंसले का बिब कवि ने प्रस्तुत किया है। कविता में इसे बिंबविधान कहते हैं।

प्रश्न :(क) बच्चे किसका इंतजार कर रहे होंगे तथा क्यों?

प्रश्न: (ख) चिड़ियों के घोंसलों में किस दृश्य की कल्पना की गई हैं?

प्रश्न : (ग) चिड़ियों के परों में चंचलता आने का क्या कारण हैं?

प्रश्न : (घ) इस अंश के द्वारा किस मानव-सत्य को दर्शाया गया है?

3.

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?

यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता हैं!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

शब्दार्थ : विकल = व्याकुल। हित = लिए, वास्ते। चंचल = क्रियाशील। शिथिल = ढीला। पद = पैर। उर = हृदय। विह्वलता = बेचैनी, दुखद भाव।

प्रसंग : यहां पर कवि ने अपने लिये किसी के प्रतीक्षारत न होने के दुख को प्रकट किया है।

व्याख्या : बच्चन जी इस काव्यांश में कहते हैं कि उनसे मिलने के लिये कोई व्याकुल हो, ऐसा प्रियजन है ही नहीं, तब वे किसके लिये शीघ्रता करें। घर की ओर भागें। बस यही प्रश्न उनके मन को उदास और तन की गति को कमजोर बना देता है। पर दिन का अवसान तो अपने क्रम को नहीं तोड़ता। वह शीघ्रता के साथ ढलता ही है।

पद लालित्य :
1 कवि ने सरल विधि से अपने भावों की अभिव्यंजना की है।
2 उनकी भाषा उनकी मनोदशा का परिपूर्ण चित्रण करने में सफल रही है।

विशेष-

1 रचना में एकाकी जीवन बिताने वाले व्यक्ति के मनोविज्ञान की प्रस्तुति हुई है।
का वास्तविक चित्रण किया गया है।

प्रश्न: (क) कवि के मन में कौन-से प्रश्न उठते हैं?

प्रश्न : (ख) कवि की व्याकुलता का क्या कारण हैं?

प्रश्न : (ग) कवि के कदम शिथिल क्यों हो जाते हैं?
प्रश्न : (घ) 'मैं होऊँ किसके हित चंचल?' का भाव स्पष्ट कीजिए

धन्यवाद

ऋचा पाण्डेय